150 MINUTES to SUCCESS

FREE Online Study Content
Current Affairs videos, PDFs, Quizzes

राजनीति
इतिहास
भूगोल
अर्थव्यवस्था
सामान्य विज्ञान
पर्यावरण
और बहुत कुछ

Essential Static GK

for Competitive Exams

अधिक अंकदायी खंड

सभी प्रतियोगी परिक्षाओं के लिए उपयोगी

अंतिम मिनट की तैयारी के लिए महत्वपूर्ण टॉपिक्स

DISHA™ Publication Inc

Essential Static GK
for Competitive Exams

DISHA™
Publication Inc

In the interest of student community

Circulation of softcopy of Book(s) in pdf or other equivalent format(s) through any social media channels, emails, etc. or any other channels through mobiles, laptops or desktops is a criminal offence. Anybody circulating, downloading, storing, softcopy of the Book on his device(s) is in breach of the Copyright Act. Further Photocopying of this book or any of its material is also illegal. Do not download or forward in case you come across any such softcopy material.

DISHA Publication Inc.

A-23 FIEE Complex, Okhla Phase II
New Delhi-110020
Tel: 49842349/ 49842350

© Copyright DISHA Publication Inc.

All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced in any form without prior permission of the publisher. The author and the publisher do not take any legal responsibility for any errors or misrepresentations that might have crept in.
We have tried and made our best efforts to provide accurate up-to-date information in this book.

Typeset By

DISHA DTP Team

Buying Books from Disha is always Rewarding

This time we are appreciating your writing Creativity.
Write a review of the product you purchased on Amazon/ Flipkart

Take a screen shot / Photo of that review

Scan this QR Code →
Fill Details and submit | That's it ... Hold tight n wait.
At the end of the month, you will get a surprise gift from Disha Publication

Scan this QR code

Write To Us At

feedback_disha@aiets.co.in

www.dishapublication.com

DISHA™ Publication Inc

CONTENTS

1	भारतीय इतिहास	1-24
2	भारतीय राजव्यवस्था	24-33
3	सर्वोच्च न्यायालय के महत्वपूर्ण फैसले	34-34
4	भूगोल	35-48
5	अर्थव्यवस्था	49-52
6	भारत में बैंकिंग	52-54
7	सरकारी कल्याणकारी योजनाएँ	54-55
8	भारतीय कृषि	55-57
9	सामान्य विज्ञान	57-74
10	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास	74-80
11	पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी	80-82
12	कला और संस्कृति	82-84
13	परिवहन	84-85

14	भारतीय रेलवे	85-87
15	खेल कूद	88-91
16	पुरस्कार (राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय)	92-94
17	अन्तर्राष्ट्रीय संगठन	94-95
18	राष्ट्रीय परिदृश्य	96-102
19	अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य	102-104

To get Free Online Current Affairs Videos, PDFs and Quizzes

Scan the QR or visit the link

Scan & Visit
https://bit.ly/
quarterly-ecourse

भारतीय इतिहास

प्राचीन भारत

प्रागैतिहासिक काल

- जिस काल के इतिहास का लिखित साक्ष्य मौजूद नहीं है, उसे 'प्रागैतिहासिक काल' कहा जाता है। इसमें पाषाण कालीन इतिहास शामिल है।
- प्रागैतिहासिक काल को तीन भागों में बाँटा गया है- पुरापाषाण काल मध्य पाषाण काल तथा उत्तर (नव) पाषाण काल। पाषाणकालीन सभ्यता का सर्वप्रथम अन्वेषण 1863 ई. में **ब्रूस फ्रुट** ने किया।

पुरापाषाण काल (250000 - 10000 ई. पू.)

- पुरापाषाण काल को तीन भागों में बाँटा गया है - (i) निम्न पुरापाषाण काल (250000 - 100000 ई.पू.) (ii) मध्य पुरापाषाण काल (100000-40000 ई.पू.) (iii) उच्च पुरापाषाण काल (40000-10000 ई. पू.)।

मध्य पाषाणकाल (10000-6000 ई. पू.)

- इस काल के लोग शिकार और मछली पकड़कर अपना पेट भरते थे। इस काल में पाषाण(पत्थर) के लघु अश्म (उपकरण) बनाए जाते थे। इस काल में तीर- कमान का प्रचलन प्रारंभ हुआ।
- भारत में सर्वप्रथम लघु अश्म 1867 में **सी. एल. कार्लाइल** द्वारा खोजा गया। फलक, वेधनी प्रमुख उपकरण थे।

नवपाषाण काल (6000-1000 ई. पू.)

- **आग की खोज** और कुत्ते को पालतू बनाना इस काल की प्रमुख विशेषता है।
- इस काल के लोग पॉलिशदार पत्थर के औजारों का प्रयोग करते थे।

सिन्धु (हड़प्पा) सभ्यता

- हड़प्पा सभ्यता का विस्तार त्रिभुजाकार था तथा उसका क्षेत्रफल 12,99,600 वर्ग किमी था। रेडियों कार्बन (C^{14}) के आधार पर इस सभ्यता का काल 2350 - 1750 ई. पू. निर्धारित किया गया है।
- 'सिंधु सभ्यता' शब्द का पहली बार प्रयोग पुरातत्वविद् सर जॉन मार्शल द्वारा किया गया, जिन्होंने 1921 ई. में इसकी खोज की।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक पूर्वी स्थल **आलमगीरपुर** (मेरठ, उ. प्रदेश), पश्चिमी स्थल **सुत्कागेंडोर** (बलूचिस्तान), उत्तरी स्थल **मांदा** (जम्मू - कश्मीर) तथा दक्षिणी स्थल **दायमाबाद** (अहमदनगर, महाराष्ट्र) है।

काल निर्धारण	
विद्वान	**निर्धारित काल**
जॉन मार्शल	3250-2750 ई. पू.
माधोस्वरूप वत्स	3500-2700 ई. पू.
मार्टिमर ह्वीलर	2500-1500 ई. पू.
अर्नेस्ट मैके	2800-2500 ई. पू.
फेयर सर्विस	2000-1500 ई. पू.
सी. जे. गैड	2350-1700 ई. पू.
कार्बन -14 (C^{14})	2350-1750 ई. पू.

- सिंधु सभ्यता के 6 स्थलों को नगर माना गया है- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगान, धौलावीरा और चन्हूदड़ो।
- **गेहूँ** और **जौ** मुख्य फसलें थीं। **शहद** का प्रयोग होता था। लोथल और रंगपुर से चावल के दाने प्राप्त हुए हैं।
- मोहनजोदड़ो से एक वृहद् स्नानागार प्राप्त हुआ है, जिसका स्नानकुण्ड 11.88 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा तथा 2.43 मीटर गहरा है।

प्रमुख स्थल, नदी, स्थिति, उत्खननकर्त्ता, वर्ष एवं प्राप्त साक्ष्य					
प्रमुख स्थल	**नदी**	**स्थिति**	**उत्खननकर्त्ता**	**वर्ष**	**प्राप्त साक्ष्य**
हड़प्पा	रावी के बाएँ किनारे पर	मोण्टगोमरी (पाकिस्तान)	दयाराम साहनी	1921	मुहरों पर एकशृंगी पशु, काँसे की इक्कागाड़ी, अन्नागार, कब्रिस्तान 37,16 भट्ठियां, श्रमिक निवास
मोहनजोदड़ो	सिंधु के दाहिने किनारे पर	लरकाना (पाकिस्तान)	राखालदास बनर्जी	1922	तीन मुख वाले देवता (पशुपति), नर्तकी की काँस्य मूर्ति, विशाल अन्नागार व स्नानागार, सूती वस्त्र, कुम्हार के 6 भठ्ठे
चन्हूइड़ो	सिन्धु	सिन्ध (पाकिस्तान)	एन. जी. मजूमदार	1931	मनके बनाने के कारखाने, दवात, मुहर निर्माण, लिपस्टिक
कालीबंगा	घग्घर (सरस्वती)	श्रीगंगानगर (राजस्थान)	अमलानन्द घोष	1953	जुते हुए खेत, नक्काशीदार ईंट, अग्निवेदिका, पकी मिट्टी का हल
लोथल	भोगवा	अहमदाबाद (गुजरात)	रंगनाथ राव	1957	बन्दरगाह (डॉकयार्ड), हाथीदाँत का पैमाना, युग्म शवाधान, चावल के दाने, खिलौना
बनावली	सरस्वती नदी	हिसार (हरियाणा)	रवीन्द्र सिंह विष्ट	1974	मिट्टी से बना हल का खिलौना, जौ
धौलावीरा	खादिर बेत	कच्छ (गुजरात)	बी. बी. लाल एवं विष्ट	1959, 1990-91	खेल का मैदान, पत्थर के नेवले की मूर्ति, स्टेडियम, जलाशय

वैदिक काल

- वैदिक काल को दो भागों में बाँटा गया है- **ऋग्वेद काल** (1500-1000 ई. पू.) एवं **उत्तरवैदिक काल** (1000-600 ई. पू.)।

ऋग्वैदिक काल

- ऋग्वेद में इस क्षेत्र को **ब्रह्मावर्त** भी कहा गया है।
- मैक्समूलर ने आर्यों का मूल निवास स्थान **मध्य एशिया** को माना है।
- राजनीतिक संरचना की सबसे छोटी इकाई **कुल** या परिवार होती थी, जिसके प्रधान को **कुलप** कहा जाता था। गांवों के मुखिया को **ग्रामणी**, कई गांवों के समूह 'विश' के प्रधान को **विशपति** तथा अनके विशों के समूह 'जन' के मुखिया (प्रधान) को **जनपति** या **राजा** (राजन्) कहा जाता था।
- ऋग्वेद के **सातवें** मंडल में **दशराज्ञ युद्ध** का वर्णन आया है, जिसमें भरत वंश के राजा **सुदास** एवं दस राजाओं के संघ (5 आर्य एवं 5 अनार्य) के मध्य **पुरुष्णी** (रावी) नदी के तट पर युद्ध हुआ था।
- इस युद्ध में सुदास विजयी हुए। भरत जन के मुख्य पुरोहित **वशिष्ठ** तथा दस राजाओं के संघ के पुरोहित **विश्वामित्र** थे।
- ऋग्वेद में इन्द्र का उल्लेख 250 बार, अग्नि का 200, जन का 275, विश का 171, वरुण का 200, सोम का 144, गंगा का 1, यमुना का 3, गण का 10, राष्ट्र का 10, पृथ्वी का 1 बार उल्लेख आया है।
- **ऋग्वैदिक नदियां**- कुभा (काबुल), सुवास्तु (स्वात), क्रुमु (कुर्रम), गोमती (गोमल), वितस्ता (झेलम), अस्किनी (चिनाब), पुरुष्णी (रावी), शुतुद्री (सतलज), विपाशा (व्यास), सदानीरा (गण्डक), दृषद्वती (घग्घर), मरुद्वृद्धा (मरूवर्मन), सुषामा (सोहन)।

ऋग्वैदिक देवता	
इन्द्र	युद्ध एवं वर्षा के देवता
मरुत	आंधी-तूफान के देवता
सरस्वती	नदी देवी
अरण्यानी	जंगल की देवी
पूषन	पशुओं के देवता
यम	मृत्यु के देवता

उत्तर वैदिक काल

- इस काल में ऋग्वैदिक देवताओं का महत्त्व घट गया तथा नए देवताओं को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। इन्द्र, वरुण आदि का स्थान **प्रजापति, विष्णु** और **रुद्र - शिव** ने ले लिया।

पंच महायज्ञ (गृहस्थ आश्रम)	
ब्रह्म या ऋषि यज्ञ	प्राचीन ऋषियों के प्रति कृतज्ञता
देवयज्ञ	देवताओं के प्रति कृतज्ञता
पितृ या नृयज्ञ	पितरों का तर्पण
मनुष्य यज्ञ	अतिथि सत्कार
भूत यज्ञ	समस्त जीवों के प्रति कृतज्ञता

- इस काल में **निष्क** एवं **शतमान** नामक मुद्राएँ प्रचलन में थीं। वणिक संघों - **गण** तथा **श्रेष्ठिन** का अस्तित्व था। **कृष्णल** बाट की मूलभूत इकाई था।
- **विभिन्न यज्ञ**- (i) राजसूय - राज्याभिषेक के समय किया जाता था। इसमें 'सोम रस' ग्रहण किया जाता था तथा राजा रत्निनों के घर जाता था (ii) **अश्वमेध**- शक्ति का द्योतक था (iii) **वाजपेय** - राजा अपनी शक्ति के प्रदर्शन हेतु रथदौड़ का आयोजन करता था (iv) **आग्निष्टोम**- इसमें अग्नि को पशुबलि दी जाती थी।
- **पृथ्वी के देवता** - अग्नि, पृथ्वी, सोम, बृहस्पति, सरस्वती।

धार्मिक आन्दोलन

जैन धर्म

- महावीर जैन धर्म के 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर हुए। इनका जन्म 540 ई. पू. में वैशाली के **कुण्डग्राम** में हुआ था। इनके पिता **सिद्धार्थ** ज्ञातृक क्षत्रियों के संघ के प्रधान थे तथा माता **त्रिशला (विदेहदत्ता)** लिच्छवी राजा **चेटक** की बहन थी।
- महावीर का एक नाम **निगंथनाथ पुत्त** भी था। महावीर को 12 वर्षों की कठिन तपस्या के बाद **जृम्भिक गांव** के पास **ऋजुपालिका** नदी के तट पर **साल वृक्ष** के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ और वे **जिन** (विजेता), **अर्हत** (पूज्य) तथा **निग्रंथ** (बंधनमुक्त) कहलाए।
- महावीर का विवाह कौण्डिन्य गोत्र की कन्या **यशोदा** के साथ हुआ। उनकी पुत्री का नाम **अर्णोज्जा** या **प्रियदर्शिनी** था।
- 30 वर्षों तक धर्मप्रचार के उपरांत 468 ई. पू. में 72 वर्ष की आयु में **पावा** (राजगृह के पास) में मल्लराजा **सृस्तिपाल** के राजमहल में महावीर को निर्वाण (मृत्यु) प्राप्त हुआ।

महत्वपूर्ण जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक

तीर्थंकर	प्रतीक
ऋषभदेव	वृषभ
अजितनाथ	गज
मल्लिनाथ (मिथिला नरेश की पुत्री)	कलश
नेमिनाथ	नीलकमल
अरिष्टनेमि	शंख
पार्श्वनाथ	सर्पफण
महावीर	सिंह

- जैन धर्म में उपवास द्वारा प्राण त्यागने को **सल्लेखन** कहा जाता है।

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध (बचपन का नाम सिद्धार्थ) का जन्म 563 ई. पू. में कपिलवस्तु के पास **लुम्बिनी वन** में हुआ था। पिता **शुद्धोधन** कपिलवस्तु के शाक्यगण के प्रधान थे तथा माता **मायादेवी** कोलीय गणराज्य की कन्या थी।
- जन्म के 7वें दिन उनकी माता की मृत्यु के बाद उनका लालन-पालन उनकी मौसी **प्रजापति गौतमी** ने किया।
- 16 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ का विवाह **यशोधरा** (गोपा, बिम्बा, भदकच्छना) के साथ हुआ, जिससे **राहुल** नामक पुत्र पैदा हुआ।
- सिद्धार्थ को 35 वर्ष की आयु में, बिना अन्न-जल ग्रहण किए 6 वर्ष की कठिन तपस्या के पश्चात् **गया** में **फल्गु** (निरंजना) नदी के तट पर **पीपल** के वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ, जिससे वे बुद्ध कहलाए।
- **चार आर्य सत्य :** (i) संसार दुःखों का घर है, (ii) तृष्णा (इच्छा) दुःखों का कारण है, (iii) इच्छाओं के त्याग से ही दुःखों से छुटकारा पाया जा सकता है तथा (iv) इच्छा को अष्टमार्ग पर चलकर समाप्त किया जा सकता है।
- **आष्टांगिक मार्ग :** (i) सम्यक् दृष्टि (ii) सम्यक् संकल्प (iii) सम्यक् वचन (iv) सम्यक् कर्म (v) सम्यक् आजीविका (vi) सम्यक् प्रयत्न (vii) सम्यक् विचार (viii) सम्यक् समाधि (अध्ययन)।
- **त्रिरत्न एवं शील के नियम :** बौद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं - **बुद्ध, संघ** एवं **धम्म**। बौद्ध भिक्षुओं के लिए 10 शील के नियम अनिवार्य हैं, जिनमें प्रथम पाँच उपासकों के लिए भी अनिवार्य हैं।
- दस शील के नियम जो नैतिक जीवन का आधार हैं - (i) अहिंसा (ii) सत्य (iii) अस्तेय (चोरी न करना) (iv) व्यभिचार न करना (v) मद्य का सेवन न करना (vi) असमय भोजन न करना (vii) सुखप्रद बिस्तर पर न सोना (viii) सुगंधित वस्तुओं का सेवन नहीं करना (ix) धन संचय न करना (x) स्त्रियों का संसर्ग न करना।
- महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण (मृत्यु)

483 ई. पू. में 80 वर्ष की अवस्था में उत्तर प्रदेश में देवरिया के **कुशीनारा** में उनके शिष्य **चुन्द** द्वारा दिए गए भोजन (सूअर मांस) ग्रहण करने के पश्चात् हुआ।

बौद्ध संगीतियाँ

	काल	स्थान	अध्यक्षता	शासक	कार्य
प्रथम	483 ई. पू.	राजगृह (सप्तपर्णी गुफा)	महाकस्सप	अजातशत्रु	सुत्त एवं विनय पिटक का संग्रहण
द्वितीय	383 ई. पू.	वैशाली	सुबुकामी	कालाशोक	बौद्धसंघ स्थविर एवं महासंधिक में बँटा।
तृतीय	251 ई. पू.	पाटलिपुत्र	मोग्लीपुत्ततिस्य	अशोक	अभिधम्म पिटक का संकलन कर कत्थावथु को जोड़ा गया।
चतुर्थ	102 ई.पू.	कश्मीर (कुण्डलवन)	वसुमित्र (अश्वघोष – उपाध्यक्ष)	कनिष्क	बौद्ध धर्म हीनयान एवं महायान में बँटा तथा विभाषाशास्त्र का संकलन किया गया।

भागवत् धर्म (वैष्णव धर्म)

- तमिल प्रदेश में वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार **अलवार संतों** द्वारा किया गया। इनकी संख्या 12 थी। इनका आविर्भाव 7-9वीं सदी के मध्य हुआ।

शैव धर्म

- **पाशुपथ :** शैव धर्म के इस सबसे प्राचीन सम्प्रदाय के प्रवर्तक **लकुलीश** थे। इसका उदय दूसरी सदी ईसा पूर्व में गुजरात में हुआ। इस सम्प्रदाय के लोग लगुण्ड या दंड धारण करते थे। पति (स्वामी), पशु (आत्मा) तथा पाश (बंधन) इसके तीन अंग हैं।
- **कापालिक :** इसके मुख्य आराध्य भैरव थे, जो शिव के अवतार माने जाते हैं। ये शरीर पर श्मशान की भस्म लगाते हैं तथा नरमुण्ड धारण करते हैं। **श्रीशैल** इनका प्रमुख केंद्र था।
- **लिंगायत :** इसके उपासक **जंगम** कहलाते थे। इसका प्रसार दक्षिण में हुआ। इसके प्रवर्तक **अल्लप्रभु** तथा उनके शिष्य **वासव** थे।
- **कालामुख :** इसका उदय कर्नाटक में हुआ। शिवपुराण में इसके अनुयायियों को **महाव्रतधर** कहा जाता है।

मौर्य साम्राज्य

चन्द्रगुप्त मौर्य (322-297 ई. पू.)

- अपने गुरु **चाणक्य** (कौटिल्य) की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य ने नन्दवंश के शासक **धनानन्द** को अपदस्थ कर मौर्य साम्राज्य की (322 ई. पू. में) स्थापना की। इस अभियान में कश्मीर के शासक **पर्वतक** ने चन्द्रगुप्त की सहायता की।
- 305 ई. पू. में चन्द्रगुप्त का संघर्ष **सेल्यूकस निकेटर** से हुआ, जिसमें सेल्यूकस की हार हुई। सेल्यूकस ने अपनी पुत्री **कार्नेलिया** का विवाह चन्द्रगुप्त से कर दी और युद्ध संधि शर्तों के तहत् उसने चार प्रान्त – **काबुल, कंधार, हेरात** एवं **मकरान** चन्द्रगुप्त को दिए।
- प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त ने 6 लाख सेनाओं के साथ पुरे भारत को रौंद डाला।